ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

इस अंक का मूल्य : 10 रुपये

वर्ष 40, अंक 25

सोमवार 17 अप्रैल, 2017 से रविवार 23 अप्रैल, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 12

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

केरल : वह देखा – जो सोचा ना था

अद्‌भुत अविश्वसनीय

3000 याज्ञिकों द्वारा एक स्वर में वेदपाठ : एक साथ उठते आहुतियों के हाथ

7 से 85 वर्ष तक महिला-पुरुष बिना किसी जातिभेद यज्ञ करते

वेदो/ खिलो धर्ममूलम्

केरल में वेद महामंदिर – महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र के परिसर का उद्घाटन के अवसर पर

दक्षिण भारतीय वैदिक महासम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न

कालीकट के काकोड़ी गाँव में आज ऋषि दयानन्द के सपने का पुनः उदय हो रहा है – स्वामी सुमेधानन्द

केरल जैसे प्रान्त में हजारों की संख्या में लोगों को बिना जातीय भेदभाव के यज्ञ करते हुए देखकर मेरा मन अभिभूत हो गया – सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह

दक्षिण भारत और उत्तर भारत का सांस्कृतिक मिलन सिर्फ वेदों के माध्यम से होगा – महाशय धर्मपाल

महाशय धर्मपाल जी ने इस देव भूमि को पुनः जीवन दान दे दिया – आचार्य एम. आर. राजेश

उत्तर और दक्षिण भारत के बीच धार्मिक एवं सांस्कृतिक सेतु का कार्य करेगा यह वेद मन्दिर – सुरेशचन्द्र आर्य

चर्चों में बाईबल मिलेगी, मस्जिदों में कुरान लेकिन हमारे मन्दिरों में वेद क्यों नहीं है?– धर्मपाल आर्य

पुरातन धार्मिक एवं वैचारिक एकता को पुनर्स्थापित करने में सहायक होगा यह संस्थान – प्रकाश आर्य

परमात्मा की कृपा से हमारे परिवार को सेवा करने का यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ – ज्योति गुलाटी (पुत्रवधु महाशय धर्मपाल)

ईश्वर की कृपा से, आर्य समाज के प्रयास से, आदि शंकराचार्य की भूमि में, आचार्य एम. आर. राजेश के सान्निध्य में और महादानी महाशय धर्मपाल की सहायता से दक्षिण भारत के प्रान्त केरल में वैदिक धर्म की जड़ों को वेद मंत्रों से सींचा गया। महाशय धर्मपाल जी की उपस्थिति में वेद के मन्त्रों के साथ यज्ञ द्वारा यह पावन कार्य शुरू हुआ। वेद रक्षा यानि ज्ञान रक्षा, संस्कार रक्षा, जीवन रक्षा, संस्कृति की रक्षा के साथ, संसार रक्षा है। मानव मूल्यों को बचाने के लिए ''महाशय धर्मपाल एम.डी.एच.वेद रिसर्च फाउंडेशन'' का उद्घाटन शुद्ध भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक तरीके से आयोजित हुआ। जैसे-जैसे सूर्य उदय हो रहा था वैसे-वैसे हजारों की संख्या में सड़कों पर केरलवासी अपने हाथों में हवन कुंड आदि लेकर वेद रिसर्च संस्थान की ओर आ रहे थे। जहाँ तक नज़र जाती पुरुष कटि वस्त्र धारण किये और महिला साड़ी पहने शुद्ध भारतीय संस्कृति में रची बसी नजर आती। हर किसी का मन और भाव हर्ष आस्था में डूबा दिखाई पड़ रहा था। कल तक जिन सड़कों पर अन्य मजहबी सन्देश के बड़े-बड़े होर्डिंग होते थे वहां-वहां स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चित्रों के साथ महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च संस्थान के होर्डिंग बैनर नजर आ रहे थे।

धार्मिक असंतुलन से जूझते केरल जैसे प्रान्त में यह कार्य अनुकरणीय था। इस अवसर पर आचार्य एम. आर. राजेश ने बोलते हुए कहा कि 20 वर्ष पहले मेरे और केरल के पास कुछ नहीं था। वेदों को जीवन में उतारने के लिए कहा जाये तो यह सोचना पड़ता था कि वेद कौन पढ़े? महिला या पुरुष? यह भी सोचना पड़ता था! हमारे सामने वेदों को गलत तरीकों से परोसा जा रहा था। गौ मांस भक्षण को गौरव बताया जा रहा था। जिस कारण यहाँ बीफ फेस्टिवल तक का आयोजन किया गया। हमने कोने-कोने से आचार्य, आर्य विद्वानों को बुलाया। हमने इसका विरोध कर बताया कि आप सैद्धान्तिक रूप से गलत हैं। आज वेद का शुद्ध रूप हमारे पास है। अब इस वेद रिसर्च फाउंडेशन की मदद से भारत के कोने-कोने से आर्ष विद्वानों को बुलाकर धर्म-अधर्म पर एक मानसिक कुरुक्षेत्र होगा, जो लोग मीडिया के माध्यम से मनुस्मृति और वेदों की गलत व्याख्या कर भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक टुकड़े करना चाहते हैं। हम आदि शंकराचार्य की इस पावन भूमि केरल से उन्हें सन्देश देते हुए कहते हैं कि आर्य समाज उनका उद्देश्य पूरा नहीं होने देगा।

जिस केरल की भूमि में सैकड़ों वर्ष पहले कभी घर-घर में वेद के मन्त्र गूंजते थे लेकिन आज जब यहाँ यह पूछा जाता था कि हमारे ग्रन्थ क्या हैं तो लोग मौन हो जाते हैं। एक ईसाई नन बाइबल पढ़ती है, मौलवियों को कुरान पढ़ाया जाता है लेकिन दु:ख का विषय यह है कि हमारे आचार्यो को वेद नहीं पढ़ाया जाता। चर्चों में बाईबल मिलेगी, मस्जिदों में कुरान लेकिन हमारे मंदिरों में वेद क्यों नहीं हैं? यह प्रश्न रखते हुए आचार्य एम. आर राजेश ने कहा मैंने स्वामी दयानन्द जी को पढ़ा, आर्य समाज के बारे में जाना जिस कारण आज इस केरल की भूमि पर आर्य समाज के सहयोग से 3 हजार से ज्यादा लोग एक साथ स्त्री और पुरुष बिना लिंग भेदभाव के, बिना जातीय भेदभाव के वेद पढ़कर यज्ञ कर रहे हैं। आर्य समाज के कारण ही आदि शंकराचार्य की इस भूमि पर आज पंच महायज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ नित्य कर्म बन सका है।

महर्षि दयानन्द जी की पुस्तक पढ़कर आज मैं वेद प्रचार कर रहा हूँ। मैंने कई साल यह सोचा कि कैसे केरल का सारा समुदाय एक होकर बिना जातीय भेदभाव के यज्ञ करे, कैसे यह छुआछूत मिटे तब मैंने स्वामी देव दयानन्द को जाना। आधुनिक भारत के इस जनक को पढ़ा, समझा और इस कारण आज यहाँ 3 हजार लोगों की उपस्थिति में गर्व के साथ यह कहना चाहता हूँ कि महाशय धर्मपाल जी ने इस देव भूमि को पुनः जीवन दान दे दिया। उन्होंने करोड़ों रुपये की लागत से यह संस्थान परिवार के लिए नहीं अपितु वेद प्रचार के लिए दान कर दिया। इसी के साथ केरल के मनोरम मौसम में हजारों लोगों के कंठ से एक साथ, एक स्वर में वेद मंत्रों से केरल का कोझीकोड गूंज उठा।

2 अप्रैल रविवार का दिन महाशय धर्मपाल जी के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ ही आर्य समाज के इतिहास का एक स्वर्णिम दिन बन गया। महाशय जी ने यह संस्थान वेदों के कार्य के लिए वैदिक धर्म के हाथों में सौंपते हुए कहा कि दक्षिण भारत और उत्तर भारत का मिलन सिर्फ

– शेष पृष्ठ 7 पर

वेद-स्वाध्याय

इन्द्र शत्रु और मित्र रहित

यदचरस्तन्वा वावृधानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणों जनेषु।
मायेत्सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से।। –ऋ. 10/54/2
ऋषिः **बृहदुक्थो वामदेव्यः**।। देवता – **इन्द्रः**।। छन्दः **विराट्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ – **इन्द्र**=हे इन्द्र! **यत् तन्वा वावृधानः**= जो तू शरीर के साथ बढ़ता हुआ **अचरः**=विचरता है जनेषु बलानि **प्रब्रुवाणः**=मानों मनुष्यों में अपने बलों को ख्यापित करता हुआ विचरता है। **यानि युद्धानि आहुः**= या जो यह वर्णन है कि तूने युद्ध किये हैं, **सा ते माया इत्**= यह सब तेरी माया ही है। **न अद्य शत्रुम्**= असल में तो न तेरा कोई आज शत्रु है **ननु पुरा विवित्से**= और न कभी पहले तूने अपना कोई शत्रु जाना है।

विनय – हे इन्द्र परमेश्वर! जो हम वेदों में भी युद्ध-वर्णन पाते हैं कि इन्द्र ने वृत्र को मारा, इन्द्र ने अपने वज्र से अमुक-अमुक असुरों का संहार किया, इन्द्र सोम को पीकर मस्त होकर बड़े पराक्रम के कार्य करता है, इन्द्र हवि को खाता है और हवि देने वाले को धन देता है. ये सब वर्णन आलंकारिक हैं। स्थूल जगत् में रहने वाले, स्थूल बुद्धिवाले हम मनुष्यों के हृदयों पर उसी वर्णन का प्रभाव होता है जो हमारे-जैसा वर्णन हो, अतएव तुम्हारे शरीर का वर्णन किया जाता है, तुम्हारे युद्धों का वर्णन किया जाता है। हम माया में रहने वालों को मायारूप से ही किया गया तुम्हारा वर्णन समझने योग्य होता है। वास्तव में न तुम्हारा कोई शरीर है और न कोई भौतिक वज्र है। तुम्हारा शत्रु त्रिकाल में भी कौन हो सकता है? तुम्हारी प्रकृति, तुम्हारी माया, सब-कुछ अपने अटल नियमों से चल रही है। पाप का फल दु:ख और पुण्य का फल सुख स्वभावतः हो रहा है। तुम न किसी के शत्रु हो ओर न मित्र हो। तुम्हारी असली शक्ति की हम कल्पना तक नहीं कर सकते. वह तो अविज्ञेय है। हम तो इतना ही देख सकते हैं कि जगत् में जो कुछ हरकत हो रही है, जो परिवर्तन हो रहे हैं, वे सब नाना प्रकार की शक्तियाँ हैं जो तुम्हारी ही एकमात्र शक्ति के अंश हैं। स्थूलरूप में सब शक्ति सफलता व विजय के रूप में दीखती है, अतः संसार की भाषा में तेरी अनन्त शक्ति का टूटा-फूटा वर्णन हम लोग इसी युद्ध के ढंग से किया करते हैं। तेरी अवर्णनीय शक्तियों का, बलों का ख्यापन हम मनुष्यों द्वारा और दूसरे किस प्रकार किया जाए?

परन्तु साथ ही यह भी ठीक है कि हमारे ये सब वर्णन माया है, अधूरे हैं, यह अवर्णनियों का वर्णन है; यह अज्ञेय का काम-चलाऊ ज्ञान कराना है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

केरल : एक सपना उतरा जमीन पर

नागालैंड, बामनिया के बाद अब केरल सचमुच यह सपना ही था कि क्या कभी इन जगहों पर भी अपने प्राचीन स्वरूप में वैदिक मन्त्रों की गूंज सुनाई देगी। अतीत भले ही इस बात का गवाह रहा हो कि दक्षिण भारत कभी वेदों की भूमि था लेकिन वर्तमान परिदृश्य में वामपंथी इतिहासकारों के द्वारा उत्तर और दक्षिण को आर्य और द्रविड़ के नाम पर बाँट दिया गया। जिसका लाभ अन्य मतमतान्तरों की मिशनरियों ने एक बड़े स्तर पर धर्मान्तरण कर उठाया लेकिन वहां आज जो भी बचा आर्य समाज अपनी पूरी शक्ति से उसे समेटने में मन, वचन और कर्म से जुटा है। यदि इस कड़ी में बात दक्षिण पश्चिम भारत के एक राज्य केरल की करें तो जहाँ आज से पहले एक हवन कुंड रखने की सुरक्षित जमीन आर्य समाज कहो या सनातन धर्म के पास नहीं थी। वहां आज एक बड़े भूभाग पर महाशय धर्मपाल जी ने वेद प्रचार के लिए संस्कृति की रक्षा हेतु एक वेद रिसर्च संस्थान दान स्वरूप भेंट कर दिया।

दूर-दूर तक फैली हरी-भरी घाटियां, सुहाना मौसम, ऊंची-ऊंची चोटियां, प्राकृतिक खुशबू से भरी हवा जैसे कि यह धरती का स्वर्ग हो। इस धरा पर 2 अप्रैल 2017 का दिन आर्य समाज के नेतृत्त्व में केरल के हिन्दू समुदाय के लिए एक एतिहासिक दिन बन गया। पतली गलियों से जब हजारों की संख्या में एक जुट हिन्दू समुदाय पुरुष स्त्री और बच्चे MDH वेद रिसर्च संस्थान की ओर आते दिखाई दिए तो मन में खुशी की लहर दौड़ गयी। हर किसी के हाथ में एक थैला था। जिसके अन्दर अपना हवनकुंड, समिधा, घृत का पात्र, जल पात्र, चम्मच, दीपक, और सामग्री थी। लोगों की इतनी बड़ी संख्या हम सब उत्तर भारतीयों के एक कौतुहल का विषय थी। हमारे मन में अथाह हर्ष के साथ एक चिंता भी बार-बार उभर रही थी कि इतनी बड़ी संख्या में आये लोगों को आयोजक किस तरह व्यवस्थित करेंगे, पर देखते ही देखते 2 से 3 मिनट के अन्दर हर कोई एक दिशा एक पंक्ति में बिना किसी बहस और बोलचाल के, बिना जाति रंग आदि के भेदभाव के सभी यज्ञ आसन मुद्रा में समान दूरी पर हवन कुंड सामने रखकर यज्ञ के लिए तैयार थे। इसमें देखने वाली बात यह थी कि इस विशाल यज्ञ की व्यवस्था को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने हेतु कोई व्यवस्थापकों की तैनाती भी नहीं की गयी थी। हर कोई स्वयं में ही व्यवस्थापक दिखाई नज़र आ रहा था।

मंच पर वेद मन्त्रों का पाठ करने वाले आचार्य थे और मंच से नीचे महाशय जी समेत विभिन्न प्रान्तों से आये आर्य महानुभाव। यज्ञ स्थल के चारों ओर का स्थान अपने नैसर्गिक सौंदर्य से चमक रहा था। हर किसी के चेहरे पर एक अनूठी आस्था, आभा सत्य सनातन धर्म के प्रति दमक रही थी। संस्थान के एक ओर समुद्र की लहरें हिलोरें ले रही थीं तो दूसरी ओर हमारे मन में हर्ष, गर्व और श्रद्धा की लहरें उठ रही थीं। हजारों लोगों की उपस्थिति में वातावरण शांत था फिर आचार्य एम. आर. राजेश के कंठ से ओ३म की ध्वनि का उच्चारण हुआ। इसके बाद हजारों लोगों के मुख से एक साथ एक स्वर में ओ३म् की ध्वनि उच्चारित हुई। आचमन मन्त्रों के बाद प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों से पूरा वातावरण वैदिकमय हो गया। स्त्री-पुरुष या बच्चे और बुजुर्ग शुद्ध वैदिक मंत्रों को उनकी यथार्थता एवं पवित्रता के साथ बिना किसी (शब्द) व (स्वर) की त्रुटि के पारम्परिक रूप से पूरी आस्था के साथ एक स्वर में लयबद्ध बोल रहे थे। पुरुष समान रंग के कटिवस्त्र तो महिलाएं पारम्परिक वस्त्र साड़ी धारण किये थीं। दूर-दूर तक जहाँ तक नजर जाती। हर किसी की शारारिक हलचल हाथ से लेकर होठ तक सामान रूप से गति कर रहे थे। यह हवन यज्ञ सुबह 7 बजे से शुरू होकर 8.30 बजे सम्पन्न हुआ जिसके उपरांत मलयालम भाषा में यज्ञरूप प्रभु हमारे प्रार्थना का सामूहिक रूप से गान हुआ। एक स्वर में प्रार्थना कर हजारों लोगों ने माहौल को भक्तिमय बना दिया। शांति पाठ के बाद यज्ञ कार्यक्रम का समापन हुआ। आज लिखते हुए खुशी हो रही है कि जिस तरह वहां सामूहिक रूप से बिना भेदभाव के यज्ञ हुआ उसे देखकर लग रहा है कि महर्षि देव दयानन्द जी का नारा था वेद की ज्योति जलती रहे जिसको लेकर वर्तमान आर्य समाज पूरी निष्ठा से वहां आगे बढ़ रहा है।

–*सम्पादक*

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

यज्ञ का वैज्ञानिक विवेचन

किसी भी मांगलिक अवसर पर हम अपनी सफलताओं और उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त करें ये नितान्त स्वाभाविक है। सामान्य बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि हम इस आयोजन को धूमधाम से करेंगे। धूमधाम से सामान्यत: यह अर्थ ग्रहण किया जाता है कि हम परस्पर इकट्ठे होकर एक पार्टी दें और झूमें और गावें। वस्तुत: धूमधाम एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। जो दो शब्दों के मेल से बना है। धूम का अर्थ है धुआं, धाम का अर्थ है स्थान। इसका अर्थ यही है, जिस स्थान पर यज्ञ का धुआं हो, जहां यज्ञ का आयोजन हो, उसी को ही धूमधाम कहते हैं।

यज्ञाधीनं जगत् सर्वम्, सारा संसार यज्ञ के आधीन है। जगत् को स्वस्थ तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए यज्ञ का होना अनिवार्य है। आर्ष सिद्धान्त अग्नि से शोधक, विभाजक शक्ति मानता है क्योंकि अग्नि उर्ध्वमुखी, किन्तु सूर्य की गति को टेढ़ी गति मानते हैं, अग्नि में आहूत पदार्थ शीघ्र वायु मण्डल में फैल जाता है और सूर्य की किरणों तथा विद्युत शक्ति से घर्षण के कारण उसकी शक्ति असंख्य गुणा बढ़ जाती है जिससे प्रदूषणों का निवारण और रोगनाश होने लगते हैं। वैदिक साहित्य में धुएं और ज्योति को विशिष्ट माना है। **धूम ज्योति: सलिल मरुतां सन्निपात:**' धुएं और ज्योति का सम्मिश्रण पाकर वायु और जल विशोधित होते हैं। अग्निहोत्र देवयज्ञ सूक्ष्मीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है। हवनकुण्ड में अग्नि के दहन से औषधत्व आसवित होकर प्रकाश संश्लेषण और ऑक्सीकरण सिद्धान्त से असंख्य गुणा प्रभावशाली हो जाते हैं। हवन द्वारा उत्पादिक तत्त्व असंख्य गुणा प्रभावशाली हो जाते हैं। हवन द्वारा उत्पादित तत्त्व असंख्य गुणा प्रदूषणों का निवारण करने में समर्थ हैं। जड़ी बूटी के होम से सुगन्धि, स्फूर्ति तथा शान्ति प्राप्त होती है। यज्ञीय ऊर्जा का यज्ञस्थल में चहुं ओर प्रभाव प्राणी जगत के लिए उपयोगी है। जो वस्तु खाने में एक व्यक्ति को लाभ देती हे वही वस्तु उचित ताप में जलाने पर असंख्य लोगों के लिए प्रभावकारी होती है।

औषधियों को आग पर जलाने से उनमें विद्यमान तत्त्व ज्यों के त्यों हवा में फैल जाते हैं। उदाहरण के लिये दालचीनी में विद्यमान 61 प्रतिशत सिन्नोमिक, एल्डी हाईड तथा 10-12 प्रतिशत यूजिनाल रक्त में घुलकर उसे पतलाकर हृदय-आघात से रक्षा करने में सहायक है। इसी तरह अंजीर में विद्यमान 'फिसिन' नामक तत्त्व आन्त्रकृमिनाशक है। इलायची में विद्यमान टर्पिनिआल ओर सीनिआल तत्त्व शरीर के दर्द का नाश करता है।

भवन की सार्थकता भावना से है, गृह की सार्थकता गृहिणी (नारी) से है, होम की सार्थकता होम (हवन) से है।

यज्ञ की मूल भावना है परोपकार, तो हम अपनी प्रसन्नता में दूसरों को भी सम्मिलित करें, उनकी उपेक्षा न करें, यही यज्ञ है। अंग्रेजी में घर को होम कहा जाता है, कौन नहीं चाहता कि घर में पावनता हो, यज्ञ से पावनता प्राप्त होती है तो वास्तव में होम के बिना कोई होम बन ही नहीं सकता।

आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण किये हुए है। इसका निवारण यज्ञ से ही सम्भव है। अनार आदि वृक्षों का फल जब झड़ता हे तब माली गुगल का धुंआ देकर ही उसके फल को उगाता है। यह हवन यज्ञ ही तो है।

यज्ञ (हवन) से लाभ:-

1. पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगन्धित होता है।
2. प्रदूषण दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है।
3. दु:ख एवं दरिद्रता का नाश होता है।
4. मानसिक शान्ति की प्रप्ति और आनन्द की वृद्धि होती है।
5. सुविचारों का जन्म होता है, जिससे बुद्धि बढ़ती है।
6. सात्विक कार्यों की वृद्धि होती है।
7. शान्ति तथा सद्भाव का प्रचार होता है।
8. देव पूजा, संगतिकरण और दान होते हैं।
9. मानवीय कर्त्तव्य का पालन होता है।

महर्षि दयानन्द जी का कथन है- जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित या अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

यज्ञ आयुधारक है-यथा- यदम्नये शुचये आयुरेवा स्मिन तेन दधाति। पवित्र अग्नि में जो आहूति दी जाती है उससे यज्ञ यजमान को आयु धारण कराता है।

अत: प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिये। शरीर की शुद्धि के लिये स्नान, सम्पत्ति की शुद्धि के लिए दान, मन की शुद्धि के लिए ध्यान तथा पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ का अनुष्ठान आवश्यक है।

- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
फ्लैट नं. सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट, विकासपुरी, नई दिल्ली-18

बोध कथा — द - दमन, दान, दया

प्रजापति के पास एक बार देवता, असुर और मनुष्य तीनों इकट्ठे होकर पहुँचे। प्रजापति ने पूछा- ''कहो भाई! कैसे आना हुआ?''

देवताओं, असुरों और मनुष्यों ने कहा-''हम उपदेश लेने आए हैं।''

प्रजापति ने कहा-''अच्छी बात है, परन्तु मैं उपदेश दूँगा उस अवस्था में जब तुम 30 वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करके मेरे पास आओ।''

30 वर्ष तक देवता, असुर और मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करते रहे। 30 वर्ष के पश्चात् फिर प्रजापति के पास आये। प्रजापति ने पूछा- ''क्यों भाई, मेरी आज्ञा का पालन हुआ?''

वे बोले-''जी महाराज!''

प्रजापति ने कहा -''अच्छी बात है। आगे बढ़ो और सुनो मेरा उपदेश।''

सबसे पहले देवता आगे बढ़े। प्रजापति ने ऊँची आवाज़ में कहा-''द'' और मौन हो गये।

अब देवता खड़े हैं। देख रहे हैं उनकी ओर, कुछ भी बोले नहीं।

प्रजापति ने पूछा-''क्यों भाई देवताओ! तुमने मेरे उपदेश का अर्थ समझा?''

देवताओं ने कहा-''जी महाराज! आपने कहा-'द' अर्थात् दमन करो। आपने हमें दमन करने, इन्द्रियों को वश में रखने का आदेश किया है।''

प्रजापति बोले-''ठीक समझे हो तुम। यही तुम्हें करना है। यही करने से तुम्हारा कल्याण होगा।''

तब मनुष्य आगे बढ़े। प्रजापति ने उनकी ओर देखते हुए कहा-''द'' और चुप हो गये।

मनुष्यों कहा-''धन्य हो प्रजापति! आपका उपदेश बहुत उत्तम है।''

प्रजापति ने पूछा-''क्या है मेरा उपदेश?''

मनुष्यों ने कहा-''आपका उपदेश है 'द' अर्थात् दान। आपने हमें दान देने का उपदेश दिया है।''

प्रजापति बोले-''ठीक समझे हो तुम। जाओ, दान देने में ही मनुष्य का कल्याण है। अब दूसरों को आगे आने दो।''

असुर आगे बढ़े तो प्रजापति ने पुन: कहा-''द'' और चुप हो गए। असुर हाथ जोड़कर खड़े रहे। प्रजापति ने पूछा-''क्यों भाई! मेरे उपदेश का अर्थ तुमने समझा?''

असुरों ने कहा-''जी महाराज! आपने हमें 'द' अर्थात् दया का उपदेश दिया है। आपने कहा कि हम प्राणिमात्र पर दया करें।''

प्रजापति बोले-''ठीक समझे हो तुम। यही है मेरा उपदेश तुम्हारे लिए।''

इस प्रकार एक ही ''द'' अक्षर से प्रजापति ने देवताओं, मनुष्यों और असुरों तीनों को उपदेश दिया। देवताओं के लिए दमन, मनुष्यों के लिए दान और असुरों के लिए दया। एक ही अक्षर का तीनों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ हो गया।

देवता उस समय देवता बनता है, जब वह अपनी इन्द्रियों का दमन करे, उन्हें वश में रखे, अन्यथा उसका देवत्व समाप्त हो जाता है। मनुष्य उस समय मनुष्य बनता है, जब तक वह स्वयं दया कर दूसरों को दान दे, दूसरों की रक्षा करे, दूसरों की सहायता करे, नहीं तो उसकी मानवता पशुता में बदल जायेगी ओर असुर सही अर्थों में उस समय असुर हैं, जब वह अपनी शक्ति को दूसरों पर दया करने के लिए, उन्हें संकटों से बचाने के लिए और उन्हें आपत्ति में सहायता देने के लिए प्रयोग करें, नहीं तो वह असुर नहीं, राक्षस बन जायेगा। **- साभार : बोध कथाएं**

घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

पुरोहित आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना - 'घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ' के विस्तार के लिए सभा को योग्य पुरोहितों की आवश्यकता है, जो स्थान-स्थान पर जाकर दैनिक यज्ञ सम्पन्न कराए तथा उपस्थित महानुभावों को अपने प्रभावी उद्बोधन से यज्ञ कराने के लिए प्रेरित कर सके। सभी संस्कार कराने में निपुण को वरीयता दी जाएगी। गुरुकुलों से इसी वर्ष निकले ब्रह्मचारी भी आवेदन कर सकते हैं। योग्यतानुसार वेतन एवं आवास सुविधा प्रदान की जाएगी। इच्छुक ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी अपना विवरण सादे कागज पर लिखकर aryasabha@ yahoo.com पर ई मेल करें या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर पंजीकृत डाक से भेजें। आवेदन पत्र के लिफाफे पर "घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना हेतु पुरोहित के रूप में आवेदन" अवश्य लिखें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

अत्यावश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोधकार्य कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाईल नं. और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों अथवा प्रकाशित लेख हों उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोध कार्य आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किया जाने का प्रस्ताव है अत: उपर्युक्त जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें।

-ईश कुमार नारंग, संयोजक, 9650183337
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com

उद्घाटन एवं वैदिक सम्मेलन के अवसर पर अतिथियों का स्वागत-सम्मान व उद्बोधन

स्वामी देवव्रत सरस्वती, स्वामी समेधानन्द सरस्वती, श्री सुरेशचन्द्र आर्य, महाशय धर्मपाल, श्री प्रकाश आर्य, आचार्य एम. आर. राजेश, डॉ. सत्यपाल सिंह

स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, सांसद एम. के. राघवन, श्री धर्मपाल आर्य, श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री विवेक शिनॉय

श्रीमती ज्योति गुलाटी, कु. हिरण्या गुलाटी, महाशय धर्मपाल जी सपरिवार यज्ञ करते हुए

आचार्य एम. आर. राजेश जी से स्मृति चिह्न प्राप्त करते - महाशय धर्मपाल जी एवं पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी, सुरेशचन्द्र आर्य, प्रकाश आर्य, डॉ. राधाकृष्ण वर्मा, स्वामी सुमेधानन्द, डॉ. सत्यपाल सिंह

आचार्य एम. आर. राजेश जी से स्मृति चिह्न प्राप्त करते - प्रेम अरोड़ा जी, राजेन्द्र जी, श्रीमती ज्योति गुलाटी एवं उनकी सुपुत्री वान्या गुलाटी। श्री अनिल अरोड़ा जी सम्मानित करते महाशय धर्मपाल जी

श्री विवेक शिनॉय जी को सम्मान । आचार्य एम. आर. राजेश एवं श्रीमती मीरा राजेश जी का सम्मान। श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्रीमती रश्मि वर्मा एवं उनकी सुपुत्री का सम्मान

उद्घाटन शिलालेख का अनावरण करते महाशय धर्मपाल जी साथ में सर्वश्री धर्मपाल आर्य, स्वामी सुमेधानन्द, सुरेशचन्द्र आर्य, आचार्य राजेश, डॉ. सत्यपाल सिंह, प्रकाश आर्य एवं अन्य आर्यजन

दीप प्रज्वलित करके सम्मेलन का शुभारम्भ करते महाशय जी साथ में हैं स्वामी सुमेधानन्द जी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, आचार्य एम. आर. राजेश जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, श्री राजेन्द्र जी एवं अन्य।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ पारम्परिक युद्ध कला कौशल, संगीत, नृत्य एवं नौकायन का लिया आर्यजनों ने भरपूर आनन्द। परिसर के साथ ही पुनूर नदी बहती है।

वेद महामन्दिर के उद्घाटन एवं दक्षिण भारतीय वैदिक महासम्मेलन में भाग लेने के लिए दिल्ली से पहुंचा आर्यजनों का समूह

पृष्ठ 3 का शेष

वेदों से होगा। इस अवसर पर महाशय जी की पुत्रवधू ज्योति गुलाटी ने हर्ष के साथ सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि हमें खुशी है कि परमात्मा की कृपा से हमारे परिवार को सेवा करने का यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ, राजेश जी और आर्य समाज को धन्यवाद करते हुए उन्होंने कहा वेद ही हमारे मूल ग्रन्थ हैं। हमें उम्मीद है यह वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन लोगों को एक साथ जोड़कर उत्तर और दक्षिण के बीच एक सेतु का काम करेगा। इस अवसर पर महाशय जी की पोतियां कु. हिरण्या गुलाटी और कु. वान्या गुलाटी ने मंच से बोलते हुए महाशय जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा हमें खुशी है कि हम इस वैदिक इतिहास का हिस्सा बने।

सीकर राजस्थान से सांसद स्वामी सुमेधानंद जी ने कार्यक्रम में पहुंचकर इसकी शोभा बढ़ाते हुए कहा कि कालीकट के काकोड़ी गाँव में आज ऋषि दयानन्द के सपने का उदय हो रहा है। आज हजारों लोगों की उपस्थिति देखकर मुझे आदि शंकराचार्य की इस पावन धरा पर दयानन्द का सपना उतरता दिखाई दे रहा है। उन्होंने आगे कहा कि वैदिक संस्कृति हमारी जड़ है, पेड़ से फल-फूल तोड़ने पर फिर आ जाते हैं, शाखाओं को काटने पर फिर आ जाती हैं किन्तु जड़ काटने पर वृक्ष फिर नहीं पनपता इसी तरह वैदिक संस्कृति हमारी जड़ है और वेद ईश्वर की वाणी है जैसे सूर्य का प्रकाश सबके लिए है इसी तरह आत्मा को पवित्र करने के लिए वेद की वाणी भी सबके लिए है।

इस पावन अवसर पर श्री प्रकाश आर्य ने अपने उद्बोधन में वैदिक संस्कृति को महान और मनुष्य के लिए कल्याणकारी बताते हुए कहा कि समुद्र में जल फेंकने

- शेष पृष्ठ 9 पर

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

You are the master of my household

"O Adorable Lord, You being the Supreme householder, may I, by Your grace, be also a good householder. May the household functions of both of us be free from any negligence. May I follow the path of the sun, Your eternal eye."

The universe is His house. By His cosmic laws, He builds and preserves the unique house. The orderly celestrial bodies. countless in number, speak of His unerring householdship. O upholder of vows, may I observe the oath to keep my house disciplined. May each one in my house obey the virtues of love and charity. May he work as per his full capacity and use his share to meet all his favourable needs in full. May all members of the household possess common property and work for a common goal. May we never snatch away other's wealth unjustly. May we dedicate each work to the Adorable Lord, who distribute gifts to the enlightend ones. Let the elders in the household respectfully enjoy in full what has been offered to them. O elders, we bow in reverence before you to gain wholesome continued happiness for the household.

अग्ने गृहपते सुगृहपतिस्त्वयाऽग्नेऽहं गृहपतिना भूयासँ सुगृहपतिस्त्वं मयाऽग्ने गृहपतिना भूयाः। अस्थूरि णौ गार्हपत्यानि सन्तु शतँ हिमाः सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ।।
(Yv. ii.27)

Agne grhapate sugrhapati stvaya 'gne' ham grhapatina bhuyasam sugrhapatistvam mayagne grhapatina bhuyah.

asthuri nau garhapatyani santu satam himah suryasya vrtamanvavrarte.

The Orator

The teacher instructs; the orator inspires. The orator is a mobile teacher. "O Orator, being purified by th rays of enlightenment, may you make your audience free from doubt. Like the sunshine which cleanses the wind, may your creative thoughts wash away the dirt from the minds of your listeners. May your manners speak aloud to them".

"O Orator, may you speak as you think. May your thoughts encompass sublimity. The earth is you home; may you feel at home in all gatherings. O Lord of Creation, guard and bless the orator. Pray, secure his vital breath, secure the purity of his spirit. O Upholder of the right, make our orators just and honourable. May their words and deeds be in harmony. May they be ever blessed by the bounties of Nature."

वाचस्पतये पवस्व वृष्णोऽअँशुभ्यां गभस्तिपूतः।

देवो देवेभ्यः पवस्व येषां भागोऽसि।। (Yv. vii.1)

Vacaspataye pavasva vrsno amsubhyam gabhasti putah.

devo devebhyah pavasva yesam bhago'si..

The Virtuous World

"May I fully realise that virtuous world where wisdom and valour work in full harmony with each other and where the enlightened ones work obeying the rule of the eternal truth."

"May I fully realise that virtuous world where the ruler and the ruled work in full harmony with each other and where there is never any scarcity of food nor misery in any form."

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।

तं लोकं पुण्य प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।। (Yv.xx.25)

यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्यञ्चौ चरतः सह।

तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र सेदिर्न विद्यते।। (Yv. xx.26)

Yatra brahma ca ksatram ca samyancau caratah saha.

tam lokam punyam prajnesam yatra devah sahagnina..

Yatrendrasca vayusca samyancau caratah sah.

tam lokam punyam prajnesam yatra sedirna vidyate..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें **संस्कृत पाठ – 22 (ब)**

गतांक से आगे....

7. पश्यति = देखता है
स: पश्यति = वह देखता है ।
सा पश्यति = वह देखती है ।
एष: पश्यति = यह देखता है ।
एषा पश्यति = यह देखती है।
क: पश्यति ? = कौन देखता है ?
राजीव: पश्यति = राजीव देखता है।
का पश्यति ? = कौन देखती है ?
सुजाता पश्यति = सुजाता देखती है।
स: किं पश्यति ?= वह क्या देखता है ?
स: वृक्षं पश्यति = वह वृक्ष देखता है ।
सा किं पश्यति ?= वह क्या देखती है ?
सा सूर्य पश्यति ।= वह सूर्य देखती है ।
अहं पश्यामि = मैं देखता/देखती हूँ ।

8. रोदिति = रोता है
स: रोदिति = वह रोता है।
सा रोदिति = वह रोती है।
एष: रोदिति = यह रोता है।
एषा रोदिति = यह रोती है।
क: रोदिति ? = कौन रोता है ?
को न रोदिति = कोई भी नहीं रोता है।
का रोदिति ? = कौन रोती है ?
कौपि न रोदिति = कोई भी नहीं रोता है।
अहम् अपि न रोदिमि =
मैं भी नहीं रोता/रोती हूँ ।

9. हसति = हँसता है
स: हसति = वह हँसता है ।
सा हसति = वह हँसती है।
एष: हसति = यह हँसता है।
एषा हसति = यह हँसती है।
क: हसति ? = कौन हँसता है ?
जगदीश: हसति = जगदीश हँसता है।
का हसति ? = कौन हँसती है ?
नित्या हसति = नित्या हँसती है।
स: कदा हसति ? = वह कब हँसता है ?
स: भ्रमणसमये हसति
= वह घूमते समय हँसता है ।
सा कदा हसति ? = वह कब हँसती है ?
सा सर्वदा हसति। = वह हमेशा हँसती है।
अहं हसामि = मैं हँसता हूँ ध्हँसती हूँ ।

10. लिखति = लिखता है
स: लिखति = वह लिखता है ।
सा लिखति = वह लिखती है ।
एष: लिखति = यह लिखता है ।
एषा लिखति = यह लिखती है
क: लिखति ? = कौन लिखता है ?
का लिखति ? = कौन लिखती है ?
विनय: लिखति = विनय लिखता है ।
विनीता लिखति = विनीता लिखती है ।
माता लिखति = माँ लिखती है ।
पिता लिखति = पिता लिखता है ।
छात्र: लिखति = छात्र लिखता है ।
छात्रा लिखति =छात्रा लिखती है ।

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग **भक्तराज अमींचन्द**

प्रायः सब आर्यलोग भक्तराज अमींचन्द जी के नाम से परिचित हैं। वे हिरण्यपुर नाम के गाँव में जन्मे थे। यह बड़ा प्रसिद्ध जंकशन (पश्चिमी पंजाब में) है। सब जानते हैं कि मेहताजी अच्छे रागी थे। नायब तहसीलदार थे। उन दिनों राग-विद्या अच्छे हाथों में न थी। इस कारण मेहताजी पर कुसंगत का प्रभाव पड़ा।

सौभाग्य से एक डॉक्टर महाशय उन्हें झेलम से गुजरात में ले गये। वहाँ उन्हें ऋषि-दर्शन का सुयश प्राप्त हुआ। ऋषि दरबार में एक भजन गाया। ऋषिवर बोल उठे, ''है तो हीरा, परन्तु कीचड़ में पड़ा हुआ है।'' ऋषि के इस कृपा-कटाक्ष से आपका जीवन ही पलट गया। आपने पर-स्त्री गमन को त्याग पत्नीव्रत धर्म को अपनाया। उच्चकोटि के महात्मा व प्रभुभक्त बने।

आपने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी में भजनों की रचना की। आपने सब प्रकार के विषयों पर गीत रचे। एक बार उन्हें कुछ भंगी मिलने आये, तत्काल उन्हीं की स्थिति के अनुकूल प्रभुभक्ति का एक गीत रच दिया जिसका भाव था कि हम सूखी-बासी रोटी खाते हैं, हम छोटे जाने जाते हैं, परन्तु हम परमेश्वर के गीत गाते हैं। एक बार आपके पास कुछ नाविक आये। इन्हें ले-जाकर नौका में बिठाया। वहाँ उन्होंने नावकों की स्थिति के अनुकूल एक मधुर भजन सुनाया।

उनका अन्तिम भजन

सन् 1894 ई. में आपने आर्यसमाज बच्छोवाली के उत्सव पर अन्तिम बार अपना एक भजन सुनाया। यह उनकी अन्तिम रचना कही जा सकती है। गीत बहुत भावपूर्ण और लम्बा है। कुछ पद इस प्रकार से हैं–

काल की आज्ञा में कैसे-कैसे
जोर-आवर चले।
क्या मजाल इस हुक्म की
कोई अदूली कर सके।।
मुखतार और वुकला बैरिस्टर
कुल मुकदमा हर चले।
झूठ की तकरीर वा मन्तक
इस जगह क्योंकर चले।।
वैद्य और हुकमा यहाँ पर
पढ़कर तिबे अकबर चले।
नुसखा न पाया मौत का
हैरान हो डॉक्टर चले।।
ज़मींदार और पत्तीदार
नम्बरदार नम्बर पर चले।
अन्त को बेदेखल हो,
देखो वे धरतीधर चले।।
कलियुग चले, सतजुग चले,
त्रेता चले, द्वापर चले।
राम चले, रावण चले,
अमींचन्द नन्दनन्दन चले।।

जब अपनी कमर में तबला बाँधे हुए भक्तजी झूम-झूमकर यह भजन गा रहे थे, तब किसे यह पता था कि यह उनका अन्तिम भजन है।

मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपनी सर्व सम्पत्ति दान में देने का मृत्यु पत्र (Death-will) लिख लिया था, परन्तु इस अन्तिम इच्छा का पालन न किया गया। वह कैसी विचित्र आत्मा थी, जिसका एक ही वाक्य से इतना हृदय परिवर्तन हो गया।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 7 का शेष

दक्षिण भारतीय वैदिक महासम्मेलन .....

से कोई लाभ नहीं होता। जल को हमेशा सूखी जमीन ग्रहण करती है। महाशय जी ने केरल की इस भूमि पर अपने दान द्वारा वैदिक वर्षा कर इस स्थान को देव भूमि बना दिया। आचार्य राजेश के संकल्प के कारण आज यहाँ धर्म प्रचार का कार्य संभव हो सका। वेद ही सनातन धर्म का मूल है जिसमें सच्चा ज्ञान निहित है। उन्होंने आर्यसमाज के नियम का हवाला देते हुए कहा कि संसार का उपकार करना ही आर्य समाज का परम धर्म है। मनुष्य के ज्ञान से पृथ्वी पर शांति स्थापित नहीं हो सकती। शांति होगी तो सिर्फ और सिर्फ वेद के ज्ञान से क्योंकि वेद सबके लिए हैं।

कार्यक्रम की सुन्दरता को बढ़ाते हुए उत्तर प्रदेश बागपत से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह ने अपने भाषण की शुरुआत मलयालम भाषा में करके महाशय जी को महात्मा की उपाधि से नवाजा। कार्यकारिणी सभा का आभार व्यक्त करते हुए डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि सबके सहयोग से यह कार्यक्रम पूर्ण हुआ। जहाँ वेद की वाणी नहीं वहां परमात्मा का घर नहीं। उन्होंने कहा कि आज हजारों की संख्या में लोगों को बिना जातीय भेदभाव के यज्ञ करते हुए देखकर मेरा मन अभिभूत हो गया। जब तक वेद का ज्ञान हम सबके पास था हम सांस्कृतिक रूप से एक थे, हमारी संस्कृति और धर्म एक था, हमारी वाणी सिर्फ संस्कृत थी। जब तक इस धरा पर वेद का प्रचार रहा। हमारा वैभव सबसे ऊपर रहा, लेकिन दुखद बात कि हमने भाषा, क्षेत्र और जाति के नाम पर सब कुछ बहा दिया। बाकी बचा ज्ञान मैकाले की शिक्षा नीति निगल गयी। इन विकट परिस्थिति के बीच मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि केरल की भूमि पर शंकराचार्य के बाद दूसरा आचार्य राजेश पैदा हो गया जो केरल में सभी को साथ लेकर चलने का संकल्प लिए है। उन्होंने आगे कहा कि जिस तरह आज हम सबको शुद्ध खाना, शुद्ध हवा, शुद्ध वातावरण चाहिए उसी तरह वेद का शुद्ध ज्ञान भी हमारे लिए आवश्यक है। वेद का ज्ञान शुद्ध है केवल इसे ही प्रमाणित करने के लिए हमें दूसरी किसी किताब की जरूरत नहीं पड़ती। मेरा सपना है एक दिन इस देश का प्रधानमंत्री भी वेद पर हाथ रखकर अपने पद और गरिमा की शपथ लेगा।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री विनय आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि केरल के पास विशाल सांस्कृतिक विरासत है। प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। केरल के इन सहृदय तथा मैत्रीपूर्ण लोगों के कारण आज आचार्य राजेश के सान्निध्य में स्वामी जी के इस सपने को साकार करते हुए महाशय जी ने अपनी दानरूपी आहुति डालकर स्वामी जी के सपने को आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा कि जिस तरह केरलवासियों को आज यज्ञ करते हुए देखा तो लगा भविष्य में फिर से भारत समेत पूरे विश्व में वैदिक पताका लहराएगी ऐसा हमारा विश्वास है।

कार्यक्रम का स्वरुप और बृहत् हो गया जब धर्मपाल आर्य ने अपने उदगार हर्ष के साथ व्यक्त करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का साक्षी होकर मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। महाशय जी द्वारा दी गयी इस आहुति की सुगंध केरल व भारत ही नहीं बल्कि दुबई तक जाएगी। उन्होंने इस कार्य के लिए आचार्य राजेश समेत सभी आर्यजनों को बधाई दी।

कार्यक्रम तब अपनी ऊंचाई पर पहुँच गया जब सुरेश चन्द्र आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य राजेश ने जो संकल्प लिया जिस निष्ठा के साथ वह आगे बढ़े वह निश्चित ही बधाई के पात्र हैं। यहाँ से उठी वैदिक मन्त्रों की यह गूंज जल्द ही भारत समेत पूरे विश्व में सुनाई देगी। उन्होंने केरल समेत अन्य प्रान्तीय आर्यजनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे आशा है स्वामी जी द्वारा जलाई गयी वेदों की ज्योति सम्पूर्ण समाज को शुद्ध और ज्ञानवान् बनाएगी।

इस अवसर पर आचार्य डॉ. स्वामी देवव्रत ने भी सभी आर्यजनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यज्ञ से सब शुद्ध हो जाता है। केरल की भूमि ऋषि मुनियों की भूमि थी जिसे पुन: महाशय जी ने जीवन दान दे दिया। उन्होंने समस्त आर्यजनों का आभार व्यक्त करते हुए आचार्य राजेश की इस पहल का स्वागत किया। अंत में स्वामी सम्पूर्णनन्द जी ने ऊँचे स्वर में वैदिक धर्म की जयघोष कर वेदों की महिमा का वर्णन कर बताया कि वेद का मार्ग ही सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरो सकता है। मुझे आशा है सभी के सहयोग से यह वैदिक ज्योति रहेगी और एक दिन अपनी उसी गरिमा को प्राप्त करेगी जहाँ कभी हजारों साल पहले हुआ करती थी।

दिल्ली सहित कई प्रान्तों से हजारों किलोमीटर की यात्रा कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने सभी आर्यजनों का महाशय जी व अन्य विद्वानों द्वारा मंच से सम्मान किया गया। विभिन्न प्रान्तों से आये सभी आर्यजनों की इस उपस्थिति को उनके समर्पण की महाशय जी ने व आचार्य राजेश ने सराहना की। कार्यक्रम की समाप्ति के अवसर पर केरल के सांस्कृतिक नृत्य एवं युद्ध शैली आदि का लोक कलाकारों व बच्चों द्वारा सराहनीय प्रदर्शन किया गया। जैसे-जैसे कार्यक्रम अपनी समाप्ति की ओर था वैसे-वैसे केरल में हुए कार्यक्रम से आर्य समाज अपनी विराट शिखर की ऊंचाई को छू रहा था। कार्यक्रम के समापन अवसर पर राष्ट्रीय गान के साथ-साथ भारत माता की जय व आर्य समाज अमर रहे के नारों से वातावरण गूंज गया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज सी-3 पंखा रोड का वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज सी-3 पंखा रोड जनकपुरी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 27 से 30 अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर डॉ. धर्मेन्द्र कुमार के प्रवचन एवं श्री जगत वर्मा के भजनोपदेश होंगे। 24, 25, 26 अप्रैल को प्रभातफेरी का आयोजन होगा। समापन समारोह 30 अप्रैल को प्रात: 7:30 से दोपहर 1 बजे तक मनाया जाएगा।

- शिव कुमार मदान, प्रधान

आर्य समाज कृष्ण नगर का 66वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली का 66वां वार्षिकोत्सव 17 से 23 अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर प्रवचन आचार्य शिवदत्त पाण्डे तथा भजनोपदेश आचार्य रामदयाल जी द्वारा होंगे। *- मन्त्री*

आर्य आर्यपुरा में आध्यात्मिक दिव्य सत्संग

आर्यसमाज आर्यपुरा सब्जी मंडी दिल्ली मे 21 से 23 अप्रैल तक आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक जी सान्निध्य में प्रतिदिन यज्ञ-भजन एवं प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित होंगे। *- विवेक आर्य, मन्त्री*

आर्य समाज डिफेंस कालोनी में विशेष प्रवचन

आर्यसमाज डिफेंस कालोनी सी-606, नई दिल्ली में दिनांक 28 अप्रैल को डॉ. शशि प्रभा कुमार के विशेष प्रवचनों का आयोजन किया जा रहा है। प्रवचन का विषय - 'वैदिक चिन्तन में पर्यावरण' रखा गया है।

- अजय सहगल, मन्त्री

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक विद्यार्थी 15 जून से 15 जुलाई 2017 के बीच आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा देकर प्रवेश प्राप्त करें। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें

-आचार्य सत्यसिन्धु आर्य (प्रधानाचार्य)
09424471288, 0990756726

आवश्यकता है पुरोहित की

दक्षिण दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्य समाज को सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। योग्य व्यक्ति अपना बायोडाटा ईमेल करें- aryasabha @yahoo.com ईमेल के विषय कॉलम में 'पुरोहित' अवश्य लिखें।

- महामन्त्री, 9958174441

आर्य समाज सूरजमल विहार का रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सूरजमल विहार ने 5 मार्च 2017 को अपने रजत जयन्ती समारोह के शुभअवसर पर यजुर्वेद पाराण महायज्ञ का आयोजन किया। कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य व आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्री अभिमन्यु चावला इत्यादि ने अपनी गरिमामयी उपस्थि दर्ज कराई। लगभग 200 आर्यजनों के बीच बच्चों ने महर्षि दयानन्द जी पर सुमधुर गीत प्रस्तुत किये।

- अशोक गुप्ता, प्रधान

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 का वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश - 1 नई दिल्ली-48 का वार्षिकोत्सव 17 से 23 अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर प्रवचन आचार्य सोमदेव शास्त्री जी तथा भजनोपदेश श्री भानु प्रकाश शास्त्री जी द्वारा होंगे। प्रवचन का विषय - 'वेद के आधार पर वैदिक सिद्धान्त' है।

- विजय लखनपाल, प्रधान

आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित धनश्री (असम), बामनिया (म.प्र.) तथा अन्य स्थानों पर संचालित विद्यालयों एवं गुरुकुलों के लिए प्रबन्धकों, सहायकों, एवं केयरटेकरों की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आर्यसमाजी पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी, पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@ yahoo.com पर ई मेल करें या चेयरमैन, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पते पर भेजें।

- महामन्त्री

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। *-मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली

प्रधान : डॉ. बलराम राणा
मंत्री : श्री चन्द्र मोहन कपूर
कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र नाथ राणा

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

आर्यसमाज रूपी भट्टी मे तपकर कुन्दन बन गया

– सुरेश आर्य

मेरा नाम सुरेश आर्य है। मैं मूल रूप से जिला बुलन्द शहर के ग्राम गंगापुर, पोस्ट कर्णवास, डिबाई का रहने वाला हूं। मेरे माता–पिता पौराणिक विचारधारा के थे और दर्जी का काम करते थे। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा कर्णवास के देवत्र इण्टर कॉलेज में हुई। सन् 1978 की बात है कि मैं छठी कक्षा में पढ़ता था। साईकिल रखने का 3 रुपये माह किराया लगता था। इस कारण मैं गंगा किनारे महर्षि दयानन्द स्मारक में अपनी साईकिल रखने जाता था क्योंकि वहां साईकिल नि:शुल्क रखी जाती थी। स्मारक में भी नित्य भजन प्रवचन होते रहते थे। वहां भी मैं अवकाश वाले दिन दवा कूटने का कार्य करता था।

1996 में मेरे बड़े भाई श्री कर्णपाल आर्य मुझे दिल्ली ले आये। दिल्ली आने पर मैं साईकिल पर घूम–घूम कर चारपाई, कुर्सी आदि रिपेयरिंग का कार्य करने लगा। उस समय मैं मांस मदिरा आदि का सेवन करता था। एक दिन मैं दोपहर के समय तेज गर्मी में सागरपुर आर्य समाज की ओर से निकला वहां ब्रह्मचारी अरुण कुमार आर्यवीर जी का प्रवचन चल रहा था। मैं भी उसे सुनने के लिए सड़क पर खड़ा हो गया। ब्रह्मचारी जी मांस–मदिरा का त्याग करने की बात कर रहे थे। उन्होंने कहा परमात्मा ने इन्सानों को जीव–जन्तुओं की रक्षा के लिए बनाया है। लेकिन इन्सान उन्हीं पर अत्याचार करता है और उनका सेवन करता है।' उनकी बातें सुनकर मुझे एक नई प्रेरणा मिली। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों को और अधिक जानने के लिए मैं आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी तथा माता सरला आर्या जी के सम्पर्क में आया। माता सरला जी ने मुझसे बात की तो वे बोलीं तुम्हारे मुंह से बदबू आ रही है। क्या तुम बीड़ी पीते हो? मैंने कहा जी, तब माता जी ने मेरे घर आकर यज्ञ किया और अनेक अवगुणों को त्यागने का दृढ़ संकल्प कराया।

परिणाम स्वरूप आज मैं आर्य समाज रूपी भट्ठी में तप कर सोने से कुन्दन बन चुका हूं। आर्य समाज के प्रति समर्पित भावना से ही प्रतिवर्ष पार्कों में यज्ञ, वेद प्रचार कार्यक्रम एवं पारिवारिक यज्ञ का कार्यक्रम समय–समय पर कराता हूं। घर–घर यज्ञ–हर घर यज्ञ के अन्तर्गत पिछले वर्ष 44 व इस वर्ष 88 यज्ञ दिल्ली और दिल्ली से बाहर कराये हैं। जिन घरों में लोग शराब आदि का सेवन करते थे। लड़ाई–झगड़ा होता था। उन घरों में जा–जाकर यज्ञ कराए और उनकी बुराइयों को दूर कराया उनके झगड़े समाप्त कराये। हर माह के पहले रविवार को सीनियर सिटीजन पार्क नसीरपुर सब्जी मण्डी के सामने द्वारका ए–1 में यज्ञ–भजन–प्रवचन का कार्यक्रम कराता हूं। आर्य समाज के प्रति समर्पित भावना से ही जुलाई 2013 को दुर्गा पार्क दिल्ली में मैंने आर्य समाज मंदिर की स्थापना की। समाज के प्रति जागरण संस्कार एवं सेवा भावना हेतु मैं डॉ. मुमुक्षु आर्य अमर शहीद पं. राम प्रसाद बिस्मिल पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में महाशय धर्मपाल चेयरमैन एम डी एच से सम्मान प्राप्त कर चुका हूं। वर्तमान समय में मैं सी ब्लॉक जनकपुरी की आर्य समाज की कार्यकारिणी का सदस्य एवं आर्य वीर दल का सहायक अधिष्ठाता और प्रभातफेरी सहसंयोजक के रूप में सेवाएं प्रदान कर रहा हूं। आज मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती उषा देवी के सहयोग से ही आर्य समाज में इतना सक्रिय योगदान देने में सक्षम हुआ हूं।

– आर.जेड. 32 ए, गली नं. 10, दुर्गा पार्क, नई दिल्ली

आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है–

'सम्पादक' – साप्ताहिक आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

email : aryasabha@yahoo.com

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले मात्र 500/–रु. सैंकड़ा	बिना सिक्के मात्र 300/–रु. सैंकड़ा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

(उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य : 100/– रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी (आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज) के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/– में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001, मो. 9540040339

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा – हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

मूल्य : 205/– रुपये प्रचारार्थ मूल्य : 150/– रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001, मो. 9540040339

क्या खुशबू, क्या स्वाद, एम डी एच मसाले हैं खास

94 साल के महाशय जी जिन्हें अब 82 सालों का तजुर्बा है। इन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। ऐसा लगता है कि इनका जन्म मसालों में ही हुआ है और मसाले ही इनका जीवन है। महाशय जी की ईमानदारी, मेहनत, लगन और मसालों का तजुर्बा ही एम.डी.एच. मसालों को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के
नवनिर्मित परिसर का विहंगम दृश्य : पीछे बहती पुन्नूर नदी स्थान की मनोरमता और भी बढ़ाती है

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20/21 अप्रैल, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर.एन.नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 अप्रैल, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सहसम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह